• कविताएं...

लिपटी परछाइयां...

उन परछाइयों को,
जो अभी अभी चांद की रसवंत
गागर से गिर
चांदनी में सनी
खिड़की पर लुढ़की पड़ी थीं,
किसने बटोरा?
चमकीले फूलों से भरा
तारों का लबालब कटोरा
किसने शिशु-पलकों पर उलट
दिया अभी-अभी?
किसने झकझोरा दूर उस तरु से
असंख्य परी हासों को?
कौन मुस्करा गई
वन-लोक के अरचित स्वर्ग में
वसन्त-विद्या के सुमन-अक्षर
बिखरा गई?
पवन की गदोलियां कोमल
थपकियों से
तन-मन दुलरा गईं?
इसी पुलक नींद दे
ऐ मायाविनी रात,
न जाने किस करवट ये स्वप्न
बदल जांए!
मां के वक्षस्थल से लगकर शिशु
सोए,
अनमोहे जाने कब
दूरी के आह्वान-द्वार खुल जांए।

-कुंबर नारायण

असन्तोष...

नहीं, मुझे सन्तोष नहीं।
मिथ्या मेरा घोष नहीं।
वह देता जाता है ज्यों ज्यों,
लोभ वृद्धि पाता है त्यों त्यों,
नहीं वृत्ति-घातक मैं,
उस घन का चातक मैं,
जिसमें रस है रोष नहीं।
नहीं, मुझे सन्तोष नहीं।
पाकर वैसा देने वाला–
शान्त रहे क्या लेने वाला?
मेरा मन न रुकेगा,
उसका मन न चुकेगा,
क्या वह अक्षय-कोष नहीं?
नहीं, मुझे सन्तोष नहीं।
मांगू क्यों न उसी को अब,
एक साथ पाजाऊं सब,
पूरा दानी जब हो
कोर-कसर क्यों तब हो?
मेरा कोई दोष नहीं।
नहीं, मुझे सन्तोष नहीं।

-मैथिलीशरण गुप्त

• कहानी/–रवींद्रनाथ टैगोर...

धन की भेंट...

गतांक से आगे...

गाव वालों से और कुछ न हो सकता था उन्होंने उस लड़के के बाप के सम्बन्ध में जांच आरम्भ की। उनको यह सोचकर बहुत दुःख होता था कि उसके माता-पिता उसकी याद में दुखी होंगे। लड़का बड़ा चंचल है, जो उन्हें इस प्रकार छोड़कर भाग आया। वे इसे हजार-हजार गालियां देते होंगे। किन्तु ये सब बातें वे जिस आवेश में करते थे इससे स्पष्ट प्रतीत होता था कि वे न्याय नहीं ईष्या से काम ले रहे हैं।

एक दिन वृद्ध को किसी बटोही की जबानी ज्ञात हुआ कि दामोदरपाल अपने बेटे की खोज में समीप के गांवों और कस्बों में फिर रहा है, और कुछ ही समय में वह इस गांव में आना चाहता है। नितई ने जब यह बात सुनी तो सहज भाव से उसके हृदय के प्रेम में आवेश आया। वह उद्विग्नता की दशा में धन-संपत्ति छोड़कर अपने पिता के पास जाने को तैयार हो गया। जगन्नाथ उसे रोकने के लिए प्रत्येक सम्भव रीति से प्रयत्न करता था। अतः उसने कहा- तुम अपने पिता के पास जाओगे तो वह तुम्हें पीटेगा, मैं तुम्हें एक ऐसे स्थान पर छिपा दूंगा कि किसी को भी तुम्हारा पता न मिल सके; यहां तक कि गांव वाले भी मालूम न कर सकेंगे।

इस बात से लड़के के हृदय में आश्चर्य उत्पन्न हुआ और वह कहने लगा- बाबा! मुझे कहां छिपाओगे? ऐसा भला स्थान तो मुझे भी दिखा दो।

जगन्नाथ ने उत्तर दिया- यदि वह स्थान मैं इस समय दिखा दूं तो लोगों को खबर हो जाएगी, रात हो जाने दो। बच्चों में आश्चर्य-जनक स्थान देखने की उत्कट लालसा होती है, नितई भी उसी तरह यह बात सुनकर प्रसन्न हुआ। उसने अपने हृदय में विचारा कि जब मेरे पिता मेरी खोज करने के पश्चात वापस चले जाएंगे तो मैं दौड़ लगाकर लड़कों के साथ उस स्थान पर आंख-मिचौनी खेला करूंगा और कोई मालूम न कर सकेगा कि मैं कहां छिपा हूं- वास्तव में उस समय बड़ा आनन्द आयेगा। पिताजी सम्पूर्ण गांव छान मारेंगे और मुझे कहीं न पा सकेंगे, बड़ी दिल्लगी होगी।

मध्यान्ह के समय जगन्नाथ लड़के को कुछ समय के लिए मकान में बन्द करके कहीं चला गया। उसके वापस आने पर नितई ने उससे इतने प्रश्न किए कि वह परेशान हो गया।

अन्त में जब रात हुई तो नितई कहने लगा- बाबा, अब तो वह स्थान मुझको दिखा दो।

जगन्नाथ ने उत्तर दिया- अभी रात नहीं हुई।

इसके कुछ समय पश्चात लड़के ने फिर कहा- बाबा, अब रात बहुत हो गई है, अब तो चलो।

जगन्नाथ ने धीरे से कहा- अभी गांव के लोग सोए नहीं हैं।

नितई फिर एक क्षण के लिए रुका और बोला- बाबा! इस समय तो सब लोग सो गये हैं, आओ अब चलें।

यह स्थान उसकी कल्पना से सर्वथा भिन्न था; क्योंकि उसमें कोई आश्चर्य की बात न थी। जब से वह घर से भागा था अनेक बार ऐसे खंडहर मन्दिरों में रातें व्यतीत कर चुका था।

इतना होने पर भी आंख–मिचौनी खेलने के लिए यह स्थान सुन्दर था अर्थात ऐसा कि उसके साथ खेलने वाले लड़के यहां उसकी खोज न कर सकते थे। जगन्नाथ ने फर्श के बीच से एक पत्थर की सिल उठाई। उसके नीचे आश्चर्य–चकित लड़के को एक तहखाना दिखाई दिया, जिसमें एक धीमा–सा दीप जल रहा था...

रात बहुत जा चुकी थी। गरीब लड़का इतनी देर तक कभी न जागा था, इसलिए उसको जागे रहने में बड़ी कठिनाई पड़ रही थी। अन्त में आधी रात के समय जगन्नाथ लड़के की बांह पकड़कर स्वप्निल गांव की अंधेरी गलियों से रास्ता टटोलता बाहर निकला। सब दिशाएं सूनी थीं, चारों ओर सूनापन था, कभी-कभी कोई कुत्ता भोंकने लगता तो और कुत्ते भी उसके साथ मिलकर भोंकना आरम्भ कर देते। इसके अतिरिक्त कहीं-कहीं उसके पैरों की आहट से कोई पक्षी वृक्ष की टहनी से पंख फड़फड़ाता हुआ उड़ जाता। नितई भय से कांप रहा था किन्तु जगन्नाथ ने उसका हाथ दृढ़ता से पकड़ा हुआ था।

कई खेतों में से होकर अन्त में ये लोग जंगल में प्रविष्ट हुए। यहां एक जीर्ण मन्दिर खड़ा हुआ था, जिसमें किसी भी देवता की मूर्ति दिखाई न पड़ती थी।

नितई ने उसे देखकर निराशा- भरे स्वर में कहा-बस, यही स्थान था?

यह स्थान उसकी कल्पना से सर्वथा भिन्न था; क्योंकि उसमें कोई आश्चर्य की बात न थी। जब से वह घर से भागा था अनेक बार ऐसे खंडहर मन्दिरों में रातें व्यतीत कर चुका था। इतना होने पर भी आंख-मिचौनी खेलने के लिए यह स्थान सुन्दर था अर्थात ऐसा कि उसके साथ खेलने वाले लड़के यहां उसकी खोज न कर सकते थे।

जगन्नाथ ने फर्श के बीच से एक पत्थर की सिल उठाई। उसके नीचे आश्चर्य- चकित लड़के को एक तहखाना दिखाई दिया, जिसमें एक धीमा-सा दीप जल रहा था। भय और आश्चर्य दोनों बातें उसके हृदय पर जमी हुई थीं। अन्दर एक बांस की सीढ़ी खड़ी थी। जगन्नाथ नीचे उतरा और नितई भी उसके पीछे हो लिया।

नीचे उतरकर लड़के ने इधर-उधर देखा तो उसे चारों ओर पीतल के टोकने पड़े हुए दिखाई दिए। उसके मध्य में एक आसन बिछा हुआ था और सामने थोड़ा सिन्दूर, घिसा हुआ चन्दन, कुछ जंगली फूल और पूजा की शेष सामग्री रखी हुई थी। लड़के ने अपनी जिज्ञासा-पूर्ति के लिए उन टोकनों में से कुछ के अन्दर हाथ डाला और जब बाहर हाथ निकालकर देखा तो मालूम हुआ कि उनमें रुपये और सोने की मोहरें भरी हुई हैं। इतने में वृद्ध जगन्नाथ ने नितई से कहा-नितई, मैंने तुमसे कहा था न कि अपनी सारी संपत्ति तुम्हें दे दूंगा, मेरे पास कोई अधिक संपत्ति नहीं है, किन्तु जो कुछ भी है वह इन पीतल के टोकनों में भरी है और यह सब मैं आज तुम्हारे हवाले करना चाहता हूं।

नितई प्रसन्नता के मारे उछल पड़ा और बोला- सच! क्या तुम इनमें से एक रुपया भी अपने पास न रखोगे?

वृद्ध ने उत्तर दिया- यदि मैं इसमें से कुछ लूं तो भगवान करे मेरा वह हाथ कोढ़ी हो जाए- किन्तु यह संपत्ति मैं तुम्हें एक शर्त पर देता हूं। यदि कभी मेरा पोता गोकुलचन्द या उसका भी पोता या परपोता या उसकी औलाद में से कोई व्यक्ति भी इस रास्ते से होकर जाये तो तुम्हारे लिए अनिवार्य होगा कि यह सारी संपत्ति उसको सौंप दो।

लड़के ने ध्यान से सोचा और निश्चय के साथ विचारा कि वृद्ध पागल हो गया है। फिर कहने लगा- बहुत अच्छा, ऐसा ही करूंगा।

जगन्नाथ ने कहा-बस तो इस स्थान पर बैठ जाओ-

क्यों?

तुम्हारी पूजा की जाएगी।

लड़के ने चकित होकर पूछा- यही रीति है!

वृद्ध ने उत्तर दिया- यही रीति है।

लड़का उछलकर तुरन्त आसन पर बैठ गया। वृद्ध जगन्नाथ ने उसके माथे पर चन्दन लगाया, भृकुटियों के मध्य सिंदुर की बिन्दी लगा दी, जंगली पुष्पों का हार उनके गले में डाला और कुछ मन्त्र उच्चारण करने लगा।

बेचारा नितई देवता की भांति आसन पर बैठा-बैठा उकता गया, क्योंकि उसकी पलकें नींद से भारी हो रही थीं। अन्त में उसने घबराकर कहा- बाबा!

-जारी

• शायरी...

ऐ मोहब्बत तिरे अंजाम पे
रोना आया
जाने क्यूं आज तिरे नाम पे
रोना आया
यूं तो हर शाम उमीदों में गुज़र जाती है
आज कुछ बात है जो शाम पे
रोना आया

◆ ◆ ◆

कभी तक़ दीर का मातम कभी दुनिया
का गिला
मंज़िल-ए-इश्क़ में हर गाम पे रोना आया
मुझ पे ही ख़त्म हुआ सिलसिला-
ए-नौहागरी
इस क़दर गर्दिश-ए-अय्याम पे रोना आया

◆ ◆ ◆

जब हुआ ज़िक्र ज़माने में मोहब्बत
का शकील
मुझ को अपने दिल-ए-नाकाम पे
रोना आया ।

-शकील बदायुनी

• दोनों जहान तेरी मोहब्बत में...

दोनों जहान तेरी मोहब्बत में हार के
वो जा रहा है कोई शब–ए–ग़म गुज़ार के
वीरां है मय–कदा ख़ुम–ओ–साग़र उदास हैं
तुम क्या गए कि रूठ गए दिन बहार के
इक फ़ुर्सत–ए–गुनाह मिली वो भी चार दिन
देखे हैं हम ने हौसले पर्वरदिगार के
दुनिया ने तेरी याद से बेगाना कर दिया
तुझ से भी दिल–फ़रेब हैं ग़म रोज़गार के
ले से मुस्कुरा तो दिए थे वो आज फ़ैज़
मत पूछ वलवले दिल–ए–ना–कर्दा–कार के।

फ़ैज–अहमद–फ़ैज